अज्ञेय की कविता 'साँप' : एक आलोचनात्मक टिप्पणी

-- डॉ. कुमार धनंजय

सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)

पटना विमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना |

साँप !

तुम सभ्य तो हुए नहीं

नगर में बसना

भी तुम्हें नहीं आया |

एक बात पूंछूं- (उत्तर दोगे ?)

तब कैसे सीखा डँसना

विष कहाँ पाया ?

अज्ञेय जी की प्रस्तुत कविता 'साँप' 15 जून 1954 को दिल्ली में लिखी गई और बाद में उनके काव्य-संग्रह 'इन्द्रधनु रौंदे हुए ये' में इसे शामिल किया गया | अज्ञेय जी की विशेषता यह है कि एक साहित्यकार के रूप में उन्होंने विभिन्न विधाओं (कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध आदि) में सफलतापूर्वक अपने रचना-कर्म को अंजाम दिया, साथ ही एक कवि के रूप में विभिन्न प्रकार की उत्कृष्ट कविताएँ भी लिखी | एक ओर उन्होंने 'असाध्य वीणा' जैसी लम्बी कविता लिखी, वहीं दूसरी ओर 'कोहरे में भूर्ज', 'पहाड़ नहीं काँपता', 'झरता पत्ता' जैसी महत्वपूर्ण छोटी कविताएँ भी लिखीं | प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह अज्ञेय की छोटी कविताओं के महत्व को अपने आलोचनात्मक लेख 'अज्ञेय का कवि-कर्म' में रेखांकित भी करते हैं | प्रस्तुत कविता 'साँप' भी अज्ञेय की ऐसी ही एक छोटी कविता है |

अज्ञेय की प्रस्तुत कविता का मूल स्वर व्यंग्यात्मक है जिसमें व्यंग्य के माध्यम से वे नगरीकरण का विरोध करना चाहते हैं | इस विरोध के लिए वे उपादान चुनते हैं- साँप को | कवि साँप को सम्बोधित कर यह प्रश्न पूछता है कि जब तुम्हारा निवास-स्थान शहर नहीं है और तुम तथाकथित रूप से 'सभ्य' भी नहीं हो तो तुम्हारे अंदर विष और डंसने की प्रवृत्ति कहाँ से आई ? बिलकुल साफ़ है कि इस कविता में कवि विष का मूल स्रोत शहर को ही मानता है | अपनी इस व्यंग्यात्मक कविता में कवि शहर और शहर की सभ्यता जिस तरह से विकसित हुई है; उसपर अपना क्षोभ व्यक्त कर रहा है | यह लोगों की सामान्य समझ है कि शहरी लोग; शहरी सभ्यता; शहरी तौर-तरीके गाँव की अपेक्षा अधिक सुसंस्कृत होते हैं | कवि अपनी इस कविता के माध्यम से लोगों की इसी सामान्य समझ को झटका देते हैं |

अज्ञेय की विस्तृत काव्य-यात्रा में पशुओं और पक्षियों के बिम्ब खूब आए हैं | यथा, सोनमछली, हारिल आदि | यहाँ पर कवि का सम्बोधन साँप से है | इसी साँप का बिम्ब उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'शेखर: एक जीवनी' के प्रारंभिक अंशों में भी उद्घाटित हुआ है | कवि यहाँ साँप के बिम्ब को सृजित करते हैं परन्तु अपना निशाना शहरीकरण पर साधते हैं | साँप का अर्थ यहाँ पर कवि ने परंपरागत ही रखा है जो कि निर्दयता और निष्ठुरता का प्रतीक है | साँप का यही अर्थ हमें अन्य काव्य-परम्पराओं (जैसे, उर्दू कविता, ब्रजभाषा-काव्य आदि) में भी देखने को मिलता है और आम-जन के अंदर भी सर्प को लेकर यही छवि गढ़ी हुई है | कहने का अर्थ यह कि कवि ने यहाँ 'साँप' के अर्थ को लेकर कोई प्रयोग नहीं किया है | कविता, मूलतः काव्य की अभिधा-शक्ति का सहारा लेती है एवं कविता में डैश, कोष्ठक एवं प्रश्नवाचक चिह्नों का प्रयोग इसे 'प्रयोगवादी कविता' की श्रेणी में डाल देता है | मगर, इन कोष्ठकों अथवा प्रश्नवाचक चिह्नों का प्रयोग कोई 'प्रयोगवादी चमत्कार' दिखाने के लिए नहीं बल्कि कविता की अर्थछवियों को बढ़ाने के लिए किया गया है | कवि जब कविता में '(उत्तर दोगे ?)' पदबंध का प्रयोग कोष्ठक के अंतर्गत करता है तो उसकी मंशा साफ़ जाहिर है कि वह इस वाक्य का प्रयोग अतिरिक्त वक्तव्य के रूप में कर रहा है और कवि को संशय है कि साँप उत्तर देगा या नहीं |इस कविता के सन्दर्भ में एक और मानीख़ेज बात

यह है कि यह अज्ञेय जैसे कवि के बने-बनाए आभिजात्य-व्यक्तित्व को झटका दे देती है | अज्ञेय का काव्य-व्यक्तित्व नफासत एवं कलात्मक अभिरुचियों से भरा पड़ा है परन्तु यहाँ कवि स्वयं नगरीकरण का विरोध कर प्रकारांतर से गँवई संस्कृति को स्थापित करने का काम कर रहा है |

कुमार धनंजय